तेरी शरणां बैठ गयो मैं | By CS Sharma Lahari

ऐजी बंगला होता, गाड़ी होती, दुलहन प्यारी प्यारी होती
घर आंगन में रोज गूंजती, बच्चों की, किलकारी होती
पैंतिस छ्त्तिस बरस बीत गए, के तक़दीर हमारी रै
मेरी भी सुनवाई करलै, क्यूं अकड़ाई धारी रै

एक बार तो पढ़ले बाबा, मेरी अरज गुजारी रै
तेरी शरणां बैठ गयो मैं, आगे मरजी थारी रै
तेरै बिन कुंण सेठ सांवरा, संकट विपदाहारी रै
तेरी शरणां बैठ गयो मैं, आगे मरजी थारी रै

कमरा कोई किराए ना देता, रंडक बंडक ताने देता
तू ही बोल बिगाड़ दिया के, मेरी जामनी कोई ना लेता
कौंण घड़ी थी वा में लिखदी, ये तक़दीर हमारी रै
तेरी शरणां बैठ गयो मैं, आगे मरजी थारी रै

के बीतैगी मेरै दिल पै, इतणीं बात बिचारी होती
एक लुगाई दे देतो तो, इतणीं भी ना खारी होती
मोटर साईकल बैठ घुमातो, बलती दुनियां सारी रै
तेरी शरणां बैठ गयो मैं, आगे मरजी थारी रै

काली गौरी, कांणीं खोड़ी, जैसी भी हो, चल ज्यागी
वरना जीणों किसो जिंदगी, मेरी धूल में रल ज्यागी
के के बात बताऊं सांवरा, एक एक दिन भारी रै
तेरी शरणां बैठ गयो मैं, आगे मरजी थारी रै

मां की याद सतावै बाबा, याद घणीं वा आवै बाबा
छोड़ चलेगी सुरगां बैठी, पड़ी किसे परणावै बाबा
"लहरी" मां कै जिसो जगत में, कोई नहीं गिरधारी रे
तेरी शरणां बैठ गयो मैं, आगैं मरजी थारी रै

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a4%e0%a5%87%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%b6%e0%a4%b0%e0%a4%a3%e0%a4%be%e0%a4%82-%e0%a4%ac%e0%a5%88%e0%a4%a0-%e0%a4%97%e0%a4%af%e0%a5%8b-%e0%a4%ae%e0%a5%88%e0%a4%82-by-cs-sharma-lahari/